सुनना, बोलना,पढ़ना और लिखना सिखाना : क्रमिक या एक साथ

कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को क्रमिक रूप से भाषा सिखाई जानी चाहिए – पहले सुनना, फिर बोलना, फिर पढ़ना और अंत में लिखना। जब उन्हें इन चारों को एक साथ पढ़ाने के लिए कहा जाता है, तो वे भ्रमित और चिंतित हो जाते हैं| क्या पढ़ने और लिखने से पहले छोटे बच्चों को सुनने और बोलने के लिए तैयार नहीं किया जाना चाहिए? क्या उन्हें पहले पढ़ना और फिर लिखना नहीं सीखना चाहिए?

बच्चों की भाषा और साक्षरता विकास पर हुए अध्ययन हमें बताते हैं कि बच्चों के साथ LSRW **क्षमताओं पर एक साथ कार्य किया जाना चाहिए , क्योंकि ये चारों क्षमताएं एक-दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं तथा एक-दूसरे पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। इन सबसे बढ़कर बात यह है कि ये सभी बच्चों के विकास की बुनियादी क्षमताओं जैसे-अर्थ-निर्माण करना और प्रतीकों का इस्तेमाल करना से जुड़े हैं ।** (Dyson, 1990; Sulzby & Teale, 1988; Wells, 2009).

निम्नलिखित चर्चा में एक फैसिलिटेटर शिक्षकों के एक समूह को LSRW **एक साथ पढ़ाने के बारे में उनके प्रश्नों को संबोधित करता है।**

फैसिलिटेटर: **हमने अपनी पहली भाषा कैसे सीखी?**

शिक्षक : हमारे आसपास में बोलनेवाले अन्य लोगों को सुनकर।

फैसिलिटेटर: ठीक है, फिर 18 महीने के लिए एक ऐसा वातावरण बनाएं जहां एक शिशु उनलोगों के संपर्क में रहे जो एक-दूसरे से बात करें। बच्चे को उसके जन्म से लेकर 18 महीने तक सुनने का अधिक से अधिक अवसर दें। अगर बच्चे को कोई भी आवाज़ या शोर करने, या किसी भी शब्द का उच्चारण करने की अनुमति नहीं हो तो क्या बच्चा भाषा सीख पायेगा?

शिक्षक : नहीं।

फैसिलिटेटर: क्यों?

शिक्षक : बच्चा अपनेआप आस-पास सुनी जानेवाली भाषा में बात करने की कोशिश करेगा। आप उसे ऐसा नहीं कह सकते कि वह केवल सुने और प्रतिक्रिया न दे|
फैसिलिटेटर: हाँ, आप सही कह रहे हैं। जब कोई बच्चा विभिन्न तरीक़ों से प्रतिक्रिया देता है तो ही वह भाषायी दक्षता हासिल कर सकता है। निष्क्रिय रहकर उसका सीखना नहीं हो सकता।

अब हम भाषा सीखने के बारे में बात करते हैं -- भाषा एक संदर्भ में सीखी जाती है। जब कोई बच्चा किसी भाषा को सीख रहा होता है तो वह शब्दों या बोली जानेवाली भाषा को केवल सुनता ही नहीं है बल्कि साथ ही साथ प्रत्येक शब्द का अर्थ बनाने और उन्हें अपने जीवन और परिवेश से जोड़ने की कोशिश करता है। वह उस रिश्ते को समझने की कोशिश करता है जिससे कि वह अपने आस-पास की वस्तुओं का निरीक्षण कर उसका पता लगा सके और अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग कर सके|और ऐसा करने के क्रम में वह साथ ही साथ वार्तालाप में शामिल होने की कोशिश करता है या यों कहें कि बोलने की कोशिश करता है|

आपने ऐसे बच्चों को अवश्य ही देखा होगा जो बड़े बच्चों/वयस्कों जैसे भले ही ना बोल पाते हों, लेकिन उन्हें अपनी ज़रूरतों एवं मांगों को बताने की कोशिश अवश्य करते हैं। वे अपने आसपास के लोगों से इशारों में, मुस्कुराकर, रोकर या बड़बड़ाकर संवाद करने की कोशिश करते हैं। यहाँ तक कि, जब कोई बच्चा पारंपरिक भाषा को बोल पाने में सक्षम नहीं होता है, तब भी वह बड़बड़ाकर या लाड़-प्यार द्वारा ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करता है। जब कोई बच्चा कुछ शब्दों को बोलना शुरू करता है, इसका मतलब यह है कि वह पहले से ही ख़ुद से बातचीत कर रहा होता है। इस प्रकार बच्चा न केवल सुनने और बोलने (व्यक्त करना) की क्रिया कर रहा होता है बल्कि, एक साथ वस्तु और विचारों के लिए वह अपने संदर्भ में समझ बना रहा होता है और यह सारी क्रियाएं एक साथ हो रही होती हैं।

बच्चे भाषा सीखने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसलिए, जब हम कहते हैं कि बच्चे सुनकर भाषा सीखते हैं तो हम भाषा सीखने की जटिल संज्ञानात्मक गतिविधि तथा बच्चे द्वारा भाषा सीखने में लगाए गए उन प्रयासों की अनदेखी कर रहे होते हैं जो एक बड़े अन्वेषण और विकास का एक हिस्सा है| अतः , यह नहीं कहा जा सकता कि भाषा केवल सुनने से ही सीखी जाती है।

हम इसे तब बेहतर तरीक़े से समझ सकते हैं, जब हम समझते हैं कि सीखे जानेवाले शब्दों में, यह समझना भी शामिल है कि उनके अर्थ क्या हैं। दूसरे शब्दों में, बच्चा भाषा सीखने के साथ-साथ अवधारणाओं को भी विकसित कर रहा होता है|

इसे कुछ उदाहरणों से समझते हैं -

उदाहरण 1:

10 महीने की एक बच्ची पानी और दूध दोनों को 'मम्' कहती है। माँ सोचती है कि बच्ची दूध माँग रही है और बच्ची की बोतल में सफ़ेद तरल पदार्थ डालना शुरू कर देती है। बच्ची तुरंत इशारे से बताती है कि वह यह 'मम्' नहीं चाहती, उसे दूसरा 'मम्' चाहिए। बच्ची पानी की तरफ़ इशारा करती है । माँ पानी लाकर देती है और कहती है "पानी" । पानी और दूध के अपने विशिष्ट गुण हैं जिसे बच्चे ने पहले ही समझ लिया है। वह यह भी जानती है कि इस समय उसे पानी की ज़रूरत है, दूध की नहीं| इसके लिए इन दोनों तरल पदार्थों के विभिन्न अनुभवों को याद रखना, तुलना करना तथा अवलोकन करना आवश्यक है| बाद में, यह बच्ची रंगहीन तरल के लिए पानी शब्द का उपयोग करेगी, लेकिन वैचारिक रूप से वह पहले ही समझ चुकी है कि दूध और पानी की प्रकृति भिन्न - भिन्न है| ऐसे ही, पानी की अवधारणा, उसके और अधिक अनुभवों के साथ विकसित होती रहती है।

उदाहरण 2:

जब वासु लगभग 2 साल का था, तो वह पालघर (Day Care) जाने लगा। वासु वहां के केयरटेकर को 'नानी' कहकर बुलाता था| शायद वह साड़ी पहनती थी इसलिए| पालघर में उसे वहां के केयरटेकर को आंटी कहने के लिए निर्देशित किया गया था। घर में, वासु ने अपनी नानी को आंटी कहकर बुलाना शुरू कर दिया। उसे यह समझने में कुछ समय लगा कि हर महिला जो साड़ी पहनती है वह "नानी" नहीं है और जो उसकी नानी है वो "आंटी" नहीं है।

चित्र 1

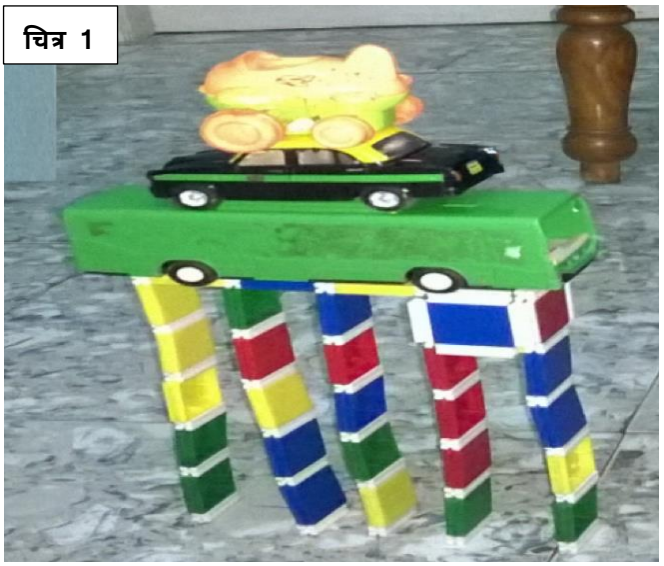

कल्पना कीजिए कि वासु यह पता लगाने के लिए किस तरह की संज्ञानात्मक प्रक्रिया से गुज़रा होगा। शब्दों का उपयोग करना सीखना, एक बड़ी संज्ञानात्मक गतिविधि का एक हिस्सा है। शब्दों की समझ बना पाना, इस छानबीन का एकमात्र हिस्सा है।

उदाहरण 3:

एक बच्चे ने एक फ्लाईओवर देखा और उसका नाम जानने के बाद वह इसके बारे में सोचता रहा।चित्र - 1 में दिए गए फ्लाईओवर को देखें जिसे बच्चे ने घर जाकर बनाया है।

इस प्रकार, जब बच्चे भाषा सीखते हैं, तो वे केवल शब्द और व्याकरण ही नहीं सीखते हैं। वे अपनी भाषा के माध्यम से सोचते हैं और अपनी दुनिया के बारे में जानने और उससे संबंध बनाने हेतु भाषा का उपयोग करते हैं। अपनी दुनिया की समझ बनाने हेतु उनके सक्रिय प्रयास, उनकी बातों, उनके सवालों और उनके द्वारा निभाई जानेवाली भूमिकाओं तथा उनके द्वारा कल्पना किए गए खेलों, उनके बनाए चित्रों एवं वस्तुओं, उनके द्वारा सुनी-पढ़ी या लिखी गई कहानियों के माध्यम से ज़ाहिर होते हैं।

गतिविधि: 1 **से** 3 **वर्ष की आयु के बच्चों का निरीक्षण करें और अपने अवलोकनों को नोट करें। भाषा सीखने की प्रक्रिया के संबंध में इन अवलोकनों को देखें।**

फैसिलिटेटर:आइए, अब हम स्कूल में भाषा-शिक्षण के बारे में सोचते हैं। हम कब कहते हैं कि स्कूल में सिखाई जानेवाली भाषा बच्चों के द्वारा सीखी जाती है?

शिक्षक: जब वह बच्चा उस भाषा को पढ़ने, लिखने, समझने और समझाने में सक्षम होता है।
फैसिलिटेटर:तो, वे यह कैसे सीखते हैं?

शिक्षक: ठीक है, आपने हमें आश्वस्त किया है कि सुनना, बोलना और विचार करना एक साथ होता है। लेकिन, हम फिर भी विश्वास करते हैं कि सुनने और बोलने को सीखने के अवसर,पढ़ने और लिखने के पूर्व दिया जाना चाहिए; और इसमें भी पढ़ना सीखने के बाद लिखना सिखाया जाना चाहिए।

फैसिलिटेटर: आप सही हैं। आमतौर पर जब कोई बच्चा नई भाषा सीखता है तो सुनने और बोलने की कुछ मूलभूत जानकारी उसे पढ़ने और लिखने से पहले होती है। लेकिन मैं यहां कुछ इंगित करना चाहूँगा। जब बच्चे स्कूल आते हैं, तो उन बच्चों के बीच अंतर होता है। एक तरफ़ वे बच्चे होते हैं जिनके घर में शैक्षिक/ साक्षर माहौल होता है एवं दूसरी तरफ़ वैसे बच्चे जिनके घर साक्षर वातावरण नहीं होता - भले ही दोनों तरह के घरों के बच्चों को अभी तक पढ़ना या लिखना नहीं आता हो।

शिक्षक : हाँ, ये एक बड़ा अंतर होता है!

फैसिलिटेटर: हां, इसका कारण यह है कि शिक्षित घरों के बच्चों ने पहले से ही पढ़ने और लिखने के बारे में बहुत कुछ सीखा है। अक्षर और शब्द पढ़ना और लिखना सीखने से पहले वे यह सीखते है कि **छपी सामग्री** का जीवन में उपयोग होता है। उन्होंने विभिन्न तरीक़ों से सीखा हुआ होता है कि उनके आस-पास के वयस्क अपने जीवन में **छपी सामग्री** का उपयोग करते हैं (जैसे- अख़बार पढ़ना, संकेत पढ़ना, सूची बनाना, फॉर्म भरना आदि)। उन्होंने **छपी सामग्री** के बारे में भी कई चीज़ें सीखी होती हैं, जैसे- यह किस दिशा में चलता है, इसका अर्थ खोजने के लिए इसे कैसे पढ़ना है, आदि।
फैसिलिटेटर: आइए, अब देखें कि हम स्कूलों में पढ़ना कैसे सिखाते हैं? आप बच्चों को स्कूलों में पढ़ने और लिखने से कैसे परिचित कराते हैं?
शिक्षक : पढ़ने के लिए बच्चों को अक्षरों की पहचान करानी चाहिए तथा शब्दों और वाक्यों को पढ़ाना चाहिए|
फैसिलिटेटर: और, लिखना क्या है?

शिक्षक : एक बार जब बच्चे अक्षरों को **पहचानने लग जाते** हैं, तो वे उन्हें लिख सकते हैं, फिर वे शब्द लिखना सीखेंगे और फिर वाक्य लिखेंगे। इसलिए, पहले उन्हें अक्षरों को पहचानना आना चाहिए और फिर लिखना आना चाहिए।

फैसिलिटेटर: पढ़ने और लिखने का उद्देश्य क्या है?

शिक्षक: बच्चों को यह भी समझने में सक्षम होना चाहिए कि क्या लिखा गया है और लेखन में अपने विचारों को भी **अभिव्यक्त** करना आना चाहिए।

फैसिलिटेटर: बच्चों को हिंदी वर्णमाला/अंग्रेजी वर्णमाला सीखने में कितना समय लगता है? आप बच्चों को शब्द लिखना कब सिखाना शुरू करते हैं? और कैसे शुरू करते हैं?

शिक्षक: पहले तीन महीनों के लिए हम उन्हें वर्णमाला का अभ्यास करने में मदद करते हैं, फिर बिना मात्रा के सरल शब्द देते हैं, फिर हम मात्राओं के साथ शब्द देते हैं, और फिर छोटे वाक्य।

फैसिलिटेटर: क्या अक्षरों का कोई अर्थ है?

शिक्षक: नहीं, लेकिन जब बच्चे शब्द बनाने के लिए अक्षरों को एक साथ मिलाकर पढ़ते हैं , तो वे उन शब्दों के अर्थ को समझते हैं।

फैसिलिटेटर: हमने पहले ही चर्चा की है कि एक बच्चा उस वातावरण की समझ बनाने के लिए सभी प्रयोग करता है, खोज करता है और कोशिश करता है कि वह उस माहौल से परिचित हो सके, जिसमें वह है।

स्कूलों में अचानक से, उस बच्चे के साथ जो **स्वयं** अपने अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया में व्यस्त है, तीन से छह महीने तक **अक्षर लिखना सिखाने जैसे** कार्य किए जाते हैं **जिसका अपनेआप में कोई अर्थ नहीं है**? वैसे शब्द जिनके वास्तविक अर्थ होते हैं, उन्हें पढ़ने और लिखने के पहले कई महीनों तक हमें उन्हें इंतज़ार क्यों करवाना चाहिए ?

गतिविधि: उन वाक्यों की एक सूची बनाएं जो बच्चा पहले से ही दिन-प्रतिदिन के जीवन में उपयोग करता है। इन वाक्यों में कितने शब्द बिना मात्रा के हैं?

संक्षेप में, पहले वर्ण / अक्षर के क्रमबद्ध तरीक़े से भाषा सिखाने की पूरी प्रक्रिया, फिर शब्द और फिर वाक्य, बच्चे की संज्ञानात्मक क्षमताओं को कम आँकना हैं। इस प्रक्रिया के दौरान, बच्चे एक सार्थक प्रक्रिया के रूप में लेखन क्षमता को आगे बढ़ाने में अपनी रुचि खो सकते हैं।

फैसिलिटेटर: अब, हम इस प्रश्न पर ध्यान देते हैं कि क्या पढ़ने से पहले लिखना आना चाहिए। आप ऐसा क्यों सोचते हैं?

शिक्षक : एक बार जब बच्चे अक्षरों की पहचान करना शुरू कर देते हैं और वे छोटे शब्दों और वाक्यों को पढ़ सकते हैं तो वे लिखना शुरू कर सकते हैं।

फैसिलिटेटर: क्या बच्चे आपके सिखाने से पहले वर्ण या अक्षर लिखना शुरू कर देते हैं?

शिक्षक : नहीं ! वह वर्ण या अक्षर कैसे लिख सकते है जब तक उन्हें सिखाया नहीं जायेगा|

फैसिलिटेटर: क्या आपने कभी बच्चों को ड्राइंग करते हुए देखा है और जब आप उनसे पूछते हैं कि उन्होंने क्या ड्रा किया है, तो वे आपको गतिविधियों, विवरणों या उनके द्वारा बनायी गई किसी कहानी का एक लंबा सार्थक क्रम बताते हैं?

शिक्षक : हाँ, लेकिन वो लिखना नहीं है।

फैसिलिटेटर: यह लेखन योग्य क्यों नहीं है?

शिक्षक : क्योंकि, बच्चे उन चित्र और स्क्रिबलिंग को पढ़ सकते हैं, लेकिन बाद में अगर उनसे उसी चित्र को पढ़ने के लिए कहा जाए, तो हो सकता है वे इसे अलग तरीक़े से पढ़ें। इसे "ड्राइंग" कहा जाता है, न कि लिखना।

फैसिलिटेटर: लेकिन, क्या आपने सोचा है ... जब वे तस्वीरें बना रहे होते हैं तो वे असल में क्या कर रहे होते हैं? चित्रों के रूप में वे विशिष्ट विचारों को अभिव्यक्त कर रहे होते हैं।

तीन साल के बच्चे द्वारा बनाई इस ड्राइंग को देखें (चित्र 2 देखें)

बच्चे ने तीन चित्र बनाए और कहा:

“पहली एक अमिना है, दूसरा एक बनी है और तीसरा उदय है। सभी हुर्रे कह रहे हैं! निशा के सभी बच्चे हँस रहे हैं”।

बच्चे ने वास्तविक दुनिया के लोगों और उनकी ख़ुशी को चित्र के रूप में प्रस्तुत किया है। इसे "प्रतीक" कहा जाता है, जहाँ कोई चीज़ किसी और चीज़ के बारे में बताती है। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा कुत्ते का चित्र बनाता है, तो चित्र एक असली कुत्ते का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह स्वयं कुत्ता नहीं होता।

आइए एक और ड्राइंग देखें (चित्र 3 देखें)। इसके बारे में पूछे जाने पर बच्चा कहता है कि यह एक डायनासोर है। बच्चे ने टीवी पर एक डायनासोर को देखा है। उसने उसे ही स्लेट पर दर्शाया है। उसका चित्रण ख़ुद डायनासोर नहीं है, बल्कि उसने उस डायनासोर को प्रस्तुत किया है, जिसे उसने टीवी पर देखा है। जीवित डायनासोर को एक स्लेट पर दो आयामी चित्र द्वारा दर्शाया जा रहा है। इस जानवर के किन पहलुओं में उसकी दिलचस्पी थी और वह इसे कैसे समझता है, यह उसके लिए अद्वितीय(सबसे अलग) होगा। एक और बच्चा इसे एक अलग तरह से प्रस्तुत कर सकता है|

प्रतीकात्मकता का अगला स्तर तब होता है जब बच्चा चित्रों के बजाय लिखित अक्षरों का उपयोग करना सीखता है, जिसे हम "पढ़ना" और "लिखना" कहते हैं। चित्रों के विपरीत एक ही अक्षर को अलग-अलग बच्चे अलग-अलग तरीक़े से प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। सभी बच्चों को उसी तरह से प्रतीकों को पढ़ना और लिखना सीखना होगा। इसलिए, पढना और लिखना सीखने के लिए पारंपरिक

प्रतीक प्रणाली का उपयोग किया जाता है - **यह वह प्रक्रिया या प्रणाली है जिसपर उस लिपि के** उपयोगकर्त्ता के बीच साझी सहमती है। लेकिन, ड्राइंग के जैसे ही पढ़ने और लिखने में भी यह अंतर्दृष्टि (समझ) विद्यमान होती है कि प्रतीकों का भी एक अर्थ होता है।

दुनिया में ऐसी कई लेखन प्रणालियां भी हैं, जो अक्षरों के बजाय लेखन की मूल इकाई के रूप में लोगो (चित्र) का उपयोग करती हैं।
जैसा कि चित्र-4, में दिखाया गया है कि दो पैरों वाली आकृति व्यक्ति को दर्शाती है, दो व्यक्ति वाला चित्र 'अनुसरण' को दर्शाता है , तीन व्यक्ति वाला चित्र-शब्द किसी 'भीड़' को दर्शाता है इत्यादि-इत्यादि ।

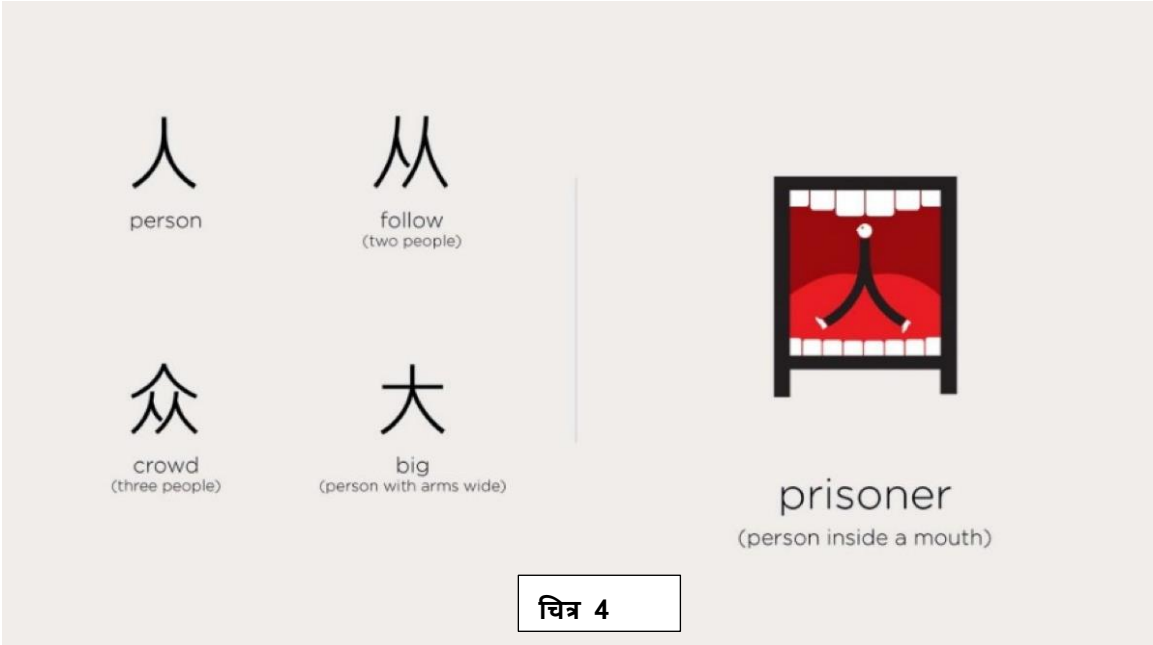

चित्र 4

यदि हम हिंदी वर्णमाला या अंग्रेजी वर्णमाला को देखते हैं तो हम पाते हैं कि वे भी प्रतीकों से बने हैं। ये प्रतीक क्या दर्शाते हैं? मौखिक भाषा में वे विशेष ध्वनियों को प्रस्तुत करते हैं !
जब हम प्रतीक (अक्षरों) को देखते हैं तो हम जानते हैं कि यह एक ध्वनि को प्रस्तुत करता है। और जब हम इन ध्वनियों को एक साथ रखते हैं तब हमें शब्द मिलते हैं, जो कि दुनिया के विचारों को प्रस्तुत करते हैं।
इसलिए बोलने , पढ़ने, लिखने और ड्राइंग करना सीखने के केंद्र में क्या है! इन सभी के सीखने के केंद्र में "प्रतीक" है। जब बच्चा भाषा सीखता है, तो वह उन प्रतीकों को सीख रहा होता है जो अर्थ को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है |

यह बहुत दिलचस्प है कि छोटे बच्चों के साथ काम करनेवाले शिक्षकों ने यह देखा होगा है कि जब बच्चे पहली बार पढ़ना और लिखना शुरू करते हैं, तो वे बहुत बातें करते हैं| वे अपने हाथों से इशारे करते हैं, वे नई-नई आवाज़ें निकालते हैं, वे विचारों पर अभिनय करते हैं| इन सभी कार्यों में वे अपने विचारों को लिखने या उन्हें व्यक्त करने की कोशिश करते हैं| वे ड्राइंग या लेखन कार्य को अर्थ बनाने के एक अलग स्वतंत्र तरीक़े के रूप में नहीं देखते हैं, बल्कि उनके लिए ये सभी एक-दूसरे के पूरक हैं| इसलिए ऐसा लगता है कि छोटे बच्चे इन सभी प्रतीक प्रणालियों का एक साथ उपयोग करते

हैं - वे पहले सुनना, फिर बोलना, फिर पढ़ना और अंत में लिखना नहीं सीखते| ये सब एक साथ होनेवाली प्रक्रियाओं में शामिल है|

इसलिए जब सुनने, बोलने, पढ़ने या लिखने की बात आती है, तो हमें उन्हें क्रमिक रूप से क्यों सिखाना चाहिए? हम अक्सर बच्चों के लेखन में सटीकता के बारे में चिंतित होते हैं, लेकिन पिक्चर ड्राइंग / स्क्रिबलिंग से पारंपरिक लेखन की ओर बढ़ना प्रतीकों को सीखने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में समय लगता है। इस प्रक्रिया के दौरान कई चरण होंगे जिसमें चित्रों और पारंपरिक प्रतीकों को एक साथ मिलाया जाएगा | इससे पहले कि हम उनसे सटीक वर्तनी उत्पन्न की अपेक्षा करें, यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों को सीखने के लिए पर्याप्त समय दिया जाए।

छोटे बच्चों को प्रतीकात्मकता की इस प्रक्रिया में मदद करने के लिए, हमें अपनी कक्षाओं में उन्हें सीखने का समय देना चाहिए, जहाँ बच्चे चारों गतिविधियों में भाग ले सकते हैं - एक साथ सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना - तथा हमें उन्हें बात करने, चित्र बनाने, अभिनय करने का पर्याप्त मौक़ा भी देना चाहिए। हम छोटे बच्चों से भाषा सीखने के बारे में यही अपेक्षा रखते हैं कि वो जानें कि :

मैं जिस बारे में सोच सकता हूँ, उस बारे में बात भी कर सकता हूँ।

मैं जिस बारे में बात कर सकता हूँ, उस बारे में लिख भी सकता हूँ।

मैं जो लिखता हूँ, उसे पढ़ भी सकता हूँ।

मैं अपने द्वारा लिखी बातों को पढ़ सकता हूँ, जो दूसरे लोग लिखते हैं मैं उसे भी पढ़ सकता हूँ |

हम जो लिखते और पढ़ते हैं, उसके बारे में बात भी कर सकते हैं।

हम जिस बारे में बात करते हैं, मैं उसके बारे में सोच भी सकता हूँ।

Adapted from ELI Handout 01 (2019):" Teaching Listening, Speaking, Reading and Writing : Sequential or Simultaneous."

References

Dyson, A. H. (1990). Symbol makers, symbol weavers: How children link play, pictures and print. *Young Children*, *45* (2), 50-57.

Sulzby, E., & Teale, W. H. (Eds.). (1988). *Emergent literacy: Writing and reading*. Ablex Publishing Corporation.

Wells, G. (2009). *The meaning makers: Learning to talk and talking to learn*. Salisbury, UK: MPG Books.

Written By:
Nisha Butoliya
Shailaja Menon
Early Literacy Initiative, Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad, May 2017.
Translated in Hindi by Saquib Ahsan